राम-काव्य-परम्परा और रामचन्द्रिका

'राम तुम्हारा चरित स्वयं ही काव्य है,
कोई कवि बन जाय सहज संभाव्य है।'

—मैथिलीशरण गुप्त

गुप्त जी की ये पंक्तियाँ भारतीय साहित्य में राम-काव्य की महत्ता का प्रतिपादन करती हैं। राम भारतीय लोक एवं साहित्य में आदर्श मानव एवं विष्णु के अवतार के रूप में प्रतिष्ठित हैं। राम-कथा के मूल स्रोत अत्यधिक प्राचीन हैं। हमारा सम्पूर्ण साहित्य—वैदिक, लौकिक, संस्कृत, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश एवं समस्त देशी भाषाओं का साहित्य—राम-कथा के विभिन्न स्रोतों से ओत-प्रोत है। भारतीय जन-जीवन में भी राम और उनकी जीवन-गाथा जनसामान्य का हृदय-हार बनी हुई है।

प्रस्तुत शीर्षक के अन्तर्गत हम रामकाव्य-परम्परा के विभिन्न स्रोतों के अध्ययन के आधार पर इस परम्परा की मूलभूत विशेषताओं का अध्ययन करेंगे। रामकाव्य-परम्परा की इन्हीं विशेषताओं के संदर्भ में हमें 'रामचन्द्रिका' का विवेचन करना है। केशव ने 'रामचन्द्रिका' में रामकाव्य-परम्परा से कितना ग्रहण किया है, राम-कथा में उन्होंने कौन से नए परिवर्तन तत्कालीन परिस्थितियों के आधार पर किए हैं तथा रामकाव्य-परम्परा में 'रामचन्द्रिका' का क्या महत्व एवं स्थान है।

रामकथा एवं रामकाव्य के मूल स्रोत एवं उसकी प्राचीनता—सर्वप्रथम वैदिक साहित्य में हमें रामकथा के प्रमुख पात्रों का नामोल्लेख मिलता है। ऋग्वेद में **'राम'** नाम के एक असुर का उल्लेख है, बाद में ऐतरेय ब्राह्मण एवं शतपथ ब्राह्मण में राम को भार्गवेय तथा औपतपस्विनि कहा गया है। उपनिषद् में वे दर्शन-शिक्षक के रूप में आए हैं। इसके अतिरिक्त विभिन्न पुराणों में राम एवं रामकथा के बिखरे हुए स्रोत मिलते हैं। वैदिक साहित्य में सीता के दो रूप हैं—कृषि देवी तथा सीता-सावित्री—एक जोड़े के रूप में। आगे चलकर ब्राह्मण-ग्रन्थों में सीता और सोम नाम के राजा की कथा का उल्लेख है। गृह्य-सूत्रों में सीता को पर्जन्य अथवा इन्द्र-पत्नी भी माना गया है। वैदिक काल की सबसे महत्वपूर्ण देवता सीता ही है। रामायण काल में आकर सीता का महात्म्य कम हो गया है।

राम और सीता के अतिरिक्त वैदिक और ब्राह्मण ग्रन्थों में इक्ष्वाकु दशरथ

honor 8X

एवं जनक का नामोल्लेख भी हुआ है। जनक तत्वज्ञ विद्वान हैं जो याज्ञवल्क्य को शिक्षा देते हैं। जनक का उल्लेख वैदिक साहित्य में सर्वाधिक है।

प्राचीन भारतीय साहित्य के अतिरिक्त विदेशी साहित्य में भी रामकथा के पात्रों—विशेष रूप से राम का—नामोल्लेख मिलता है। मिस्र में रामेरु नाम के एक राजा का उल्लेख है। एक राजा की पुत्री का नाम सीतामन भी मिलता है। ईरान के एक राजा का नाम वशिष्ठ है। तुर्की में एक राजा का नाम दशरथ मिलता है। होमर के काव्य तथा वाल्मिकी 'रामायण' में भी कुछ विद्वानों ने समानता खोजने की चेष्टा की है।

पाश्चात्य विद्वानों ने रामकथा के मूल स्रोत एवं उसके विकास का अध्ययन किया है। उनमें से कुछ तो रामकथा का मूल स्रोत वैदिक साहित्य में मानते हैं और कुछ बौद्ध जातकों में। कुछ ने राम-रावण के युद्ध को आर्य और अनार्य का युद्ध माना है तथा कुछ ने ब्राह्मणों और बौद्धों का। इन विद्वानों में वेबर, याकोबी, मैकडानल, व्हीलर आदि के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

भारतीय विद्वानों ने भी वैदिक, पौराणिक एवं प्राचीन इतिहास के आधार पर रामकथा के विभिन्न सूत्रों को खोजने की चेष्टा की है। उत्तर एवं दक्षिण में राम एवं रावण को लेकर विभिन्न आख्यान प्रचलित हैं। इस प्रकार निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि वाल्मिकी से पूर्व रामकथा विभिन्न बिखरे हुए मौखिक एवं लिखित आख्यानों के रूप में प्रचलित थी। वाल्मिकि ने अपनी रुचि, प्रतिभा एवं संस्कार के आधार पर रामकथा के इन बिखरे हुए रूपों को सूत्रबद्ध करने की चेष्टा की।

राम—आदर्श मानव से अवतार पुरुष तक—वाल्मीकि ने 'रामायण' में 'राम' को एक आदर्श मानव मानकर रामकथा के बिखरे आख्यानों का आकलन किया है। वाल्मीकि के राम एक आदर्श राजा के रूप में हैं जो अपनी प्रजा के कल्याण के लिए अनेक उत्तम कार्य करते हैं। राम के व्यक्तित्व से सम्बन्धित अनेक उपाख्यान जनसामान्य में प्रचलित थे। राम आदर्श मानव से 'महामानव' एवं 'अतिमानव' के रूप में प्रतिष्ठित होते जा रहे थे। जनसामान्य के हृदय में उनके प्रति 'श्रद्धा' का भाव धीरे-धीरे बढ़ रहा था।

वैदिक कथाओं से यह प्रमाणित होता है कि विभिन्न प्राकृतिक शक्तियाँ ही जनसामान्य की श्रद्धा प्राप्त कर देवी-देवता के रूप में पूजित होती हैं और फिर उनके प्रति धार्मिक प्रवृति का उदय होता है। राम के सम्बन्ध में भी यही हुआ। राम धीरे-धीरे एक प्राकृतिक शक्ति के रूप में विकसित होने लगे। उनकी तुलना आंशिक रूप से यत्र-तत्र विष्णु के रूप में होने लगी। आगे चलकर 'अवतारवाद' की भावना का विकास हुआ और वही राम जिनकी तुलना प्रारम्भ में विष्णु के साथ की गई थी, विष्णु के आंशिक अवतार माने जाने लगे और बाद में विष्णु के पूर्णावतार।

honor 8X

वाल्मीकि 'रामायण' में कुछ ऐसे स्थल हैं जहाँ राम को विष्णु का अवतार माना गया है। पर विद्वानों की दृष्टि में ये अंश प्रक्षिप्त हैं। वाल्मीकि रामायण के पश्चात् जब राम का सम्बन्ध विष्णु से जोड़ दिया गया, तो वे और भी अधिक लोक-प्रिय हो गए। यही कारण है कि आदि काल से लेकर आज तक साहित्य के सर्वाधिक लोक-प्रिय कथानायक 'राम' ही हैं।

केशव पूर्व रामकाव्य-परम्परा – आदि कवि वाल्मीकि की 'रामायण' ही राम-काव्य-परम्परा का आदि स्तम्भ है। उनके पश्चात् रामकथा को लेकर विपुल साहित्य की रचना हुई है। 'वाल्मीकि ने जिस आदर्श मानव राम की प्रतिष्ठा की थी वह जनता को इतना अधिक आकर्षक प्रतीत हुआ कि वह उसके अंतर में बस गया तथा वाल्मीकि को आधार मानकर सहस्त्रों रामकाव्यों की रचना हुई।'[1]

संस्कृत साहित्य में रामकाव्य-परम्परा

वाल्मीकि रामायण—वाल्मीकि 'रामायण' में सात काण्डों में रामकथा का शृङ्खलाबद्ध वर्णन है। विद्वान मूल रामायण में केवल ५ काण्ड ही मानते हैं। पहले और सातवें काण्डों को वे बाद की रचना मानते हैं। डॉ० रामकुमार वर्मा के अनुसार "वाल्मीकि रामायण का पहला और सातवाँ काण्ड बाद का लिखा जान पड़ता है। इसका कारण यह है कि दूसरे से छठे काण्ड तक राम का जो रूप है वह ईश्वर का न होकर एक तेजस्वी महापुरुष का है। पहले और सातवें काण्ड में राम के चरित्र में अलौकिकता का अंश अधिक हो गया है। ···वाल्मीकि रामायण के मूल में राम एक महापुरुष हैं, न तो वे देवता हैं न देव के अवतार।"[2] आगे चल कर पहले और सातवें काण्ड की कथा में ही मूल में अनिश्चितता एवं शिथिलता होने के कारण अनेक परिवर्तन हुए। परवर्त्ती रामकाव्य-कथा पर वाल्मीकि रामायण की कथा का प्रभाव स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है। दूसरे से लेकर छठे काण्ड तक की वाल्मीकि रामायण की कथा को बाद में ज्यों का त्यों ग्रहण किया गया है। पहले और सातवें काण्ड की कथा में अवश्य हेर-फेर होता रहा है।

वाल्मीकि परवर्त्ती संस्कृत रामकाव्य—वाल्मीकि रामायण का इतना अधिक प्रभाव हुआ कि आगे चलकर इस कथानक के आधार पर अनेक ग्रंथों की रचना हुई। यद्यपि युग की आवश्यकता के अनुसार मूल रामकथा में अनेक परिवर्तन हुए पर उन सब पर 'रामायण' का प्रभाव अवश्य है। 'वाल्मीकि के परवर्त्ती रामकवियों के काव्यों की आनुषंगिक कथा में अनेक परिवर्तन होते गए हैं। इन परिवर्त्तनों के लिए कवियों की सामयिक परिस्थितियाँ, भारत की उत्तरोत्तर परिवर्त्तित होती हुई सभ्यता तथा कवियों की व्यक्तिगत रुचि आदि अनेक कारण उत्तरदायी हैं। आदि रामायण

---

१. रामकाव्य-परम्परा में रामचन्द्रिका का विशिष्ट अध्ययन—डा० गार्गी गुप्त, पृ० ५१
२. रामकुमार वर्मा—विचार दर्शन

की मूल भित्ति धर्म तथा कर्त्तव्य-भावना थी। परन्तु कालांतर में धर्म के स्थान पर जनता की शृङ्गारिक प्रवृत्तियाँ उद्बुद्ध होती गईं, फलतः राम मर्यादा पुरुषोत्तम का रूप त्याग कर विलासी राम बन गए।'[1]

डा० गार्गी गुप्त ने संस्कृत के रामकाव्य को तीन भागों में विभक्त किया है—(१) वे कवि जिन्होंने सच्चे हृदय से प्रेरित होकर सहज एवं सरस काव्य रचना की। (२) काव्यशास्त्र के पंडित कवि जिन्होंने राम-कथा के माध्यम से शास्त्रीय अभिव्यंजना की। (३) जिन्होंने शृङ्गार के कलुषित रूप का चित्रण किया। इसी आधार पर हम परवर्ती संस्कृत-रामकाव्य का अध्ययन करेंगे—

प्रथम कोटि

रघुवंश—कालीदास कृत इस ग्रंथ के ५ सर्गों में राम-कथा का वर्णन है। इन पर वाल्मीकि का प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित होता है। कालीदास शृङ्गार एवं सौन्दर्य के कवि हैं उनका शृङ्गार मर्यादित है। 'रघुवंश' में उन्होंने राम को विष्णु के अवतार के रूप में स्वीकार किया है। अपनी व्यक्तिगत रुचि के आधार पर उन्होंने कुछ स्थलों का संक्षेप में तथा कुछ का विस्तार पूर्वक चित्रण किया है। राम-रावण युद्ध का उन्होंने सविस्तार वर्णन किया है।

प्रतिमा नाटक—भास पहले नाटककार हैं जिन्होंने राम-कथा के आधार पर नाटक की रचना की। नाटकीयता एवं साहित्यिकता के कारण भास ने मूल कथा में अनेक परिवर्तन किए। इस नाटक में राम राजकुमार एवं आदर्श मानव के रूप में ही प्रतिष्ठित हैं। राम-कथा के भावपूर्ण स्थलों का भास ने सरस एवं मर्मस्पर्शी चित्रण किया है।

उत्तर राम-चरित—भवभूति ने अपने प्रस्तुत नाटक में राम-कथा के उत्तरार्ध को लेकर कथानक का संगठन किया है। यह करुण रस प्रधान नाटक है जिसमें सीता के वियोग एवं राम की विरहावस्था का चित्रण है। भवभूति ने राम और सीता के शृङ्गार का भी सहज चित्रण किया है। राम यहाँ भी आदर्श मानव के रूप में ही गृहीत हैं। भवभूति की मूल रुचि भी शृङ्गारोन्मुख थी पर उनका शृङ्गार चित्रण सहज, सरल एवं स्वाभाविक है। वह ऐन्द्रिय शृङ्गार अथवा कामुकता से बहुत दूर है।

द्वितीय कोटि

रावण-वध—इस काव्य-ग्रन्थ के रचयिता भट्टि अलंकार एवं व्याकरण-शास्त्र के प्रकाण्ड विद्वान थे। उन्होंने 'रावण-वध' में अपने काव्य-शास्त्रीयज्ञान एवं अलंकार-शास्त्र का पूर्ण उपयोग किया है। अलंकारों के अतिशय प्रयोग से उनका काव्य कुछ जटिल भी हो गया है। राम-कथा में उन्होंने शैव होने के कारण कुछ परिवर्तन भी किए हैं। राम को उन्होंने नारायणावतार माना है।

---

१. रामकाव्य परम्परा में रामचन्द्रिका का विशिष्ट अध्ययन—डा० गार्गी गुप्त—पृ० ६७

राघव पाण्डवीय—कविराज ने इस कथा में एक मौलिक प्रयोग किया है। इसमें रामायण एवं महाभारत की कथा साथ-साथ चलती हैं। इसमें श्लेष का चमत्कार है, श्लेष के आधार पर दोनों कथाएँ साथ-साथ चलती हैं। इसी शैली पर हरदत्त सूरि ने 'राघव नैषधीय', चिदम्बर ने 'राघव पाण्डवीय यादवीय' तथा वैंकटध्वरि ने 'यादव राघवीय' की रचना की। मुरारिकृत 'अनर्घराघव' एवं राजशेखर कृत 'बालरामायण' में भी यही चमत्कारपूर्ण शैली मिलती है।

तृतीय कोटि

रामकाव्य में शृङ्गार की प्रवृत्ति मूल में ही थी पर यह प्रवृत्ति धीरे-धीरे व्यापक होती गयी और एक युग ऐसा आया जहाँ राम, सीता मात्र शृङ्गार के आलम्बन एवं आश्रय बनकर रह गए। 'सेतुबंध', 'जानकी-हरण' (कुमारदास) आदि ग्रंथों में शृङ्गारिक एवं विलासिता की प्रवृत्ति का चित्रण किया गया है।

प्रसन्नराघव—के रचयिता जयदेव दूसरी और तीसरी कोटि के कवियों के मध्यवर्ती हैं। एक ओर जहाँ उन्होंने इस ग्रंथ में शास्त्रीय ज्ञान की अभिव्यंजना की है वहीं दूसरी ओर शृङ्गारिकता का भी चित्रण किया गया है।

प्रसन्नराघव में संवाद एवं शृङ्गारिकता की ही इसकी प्रधान विशेषताएँ हैं। उनके संवादों में जो तर्क शक्ति है और उनमें जो व्यंग्य तथा प्रतिभा अन्तर्हित है वह बरबस मन को आकर्षित कर लेती है।[1]

हनुमन्नाटक—अज्ञात लेखक की यह कृति रामकाव्य-परम्परा में बाद की रचना है। इस युग तक सभी सम्प्रदायों के अनुयायी राम के महत्व को स्वीकार कर चुके थे। यह नाटक घोर शृङ्गारिक है। इस नाटक में वासनामूलक एवं ऐहिक शृङ्गार के नग्न एवं अश्लील चित्र अङ्कित किए गए हैं। प्रकृति-चित्रण प्रस्तुत नाटक की अन्यतम विशेषता है। प्रकृति का अलंकृत एवं साहित्यपूर्ण चित्रण ही अधिक किया गया है। मार्मिक स्थलों पर भी लेखक ने अधिक ध्यान नहीं दिया है। 'वर्णन कौशल' भी नाटक की महत्वपूर्ण विशेषता है। शुद्ध काव्य की दृष्टि से यह नाटक सर्वश्रेष्ठ कृति है।

नाटकों की इस परम्परा में संस्कृत में कुछ नाटक और मिलते हैं पर उनका विशेष प्रभाव केशव की 'रामचन्द्रिका' पर नहीं पड़ा।

धार्मिक ग्रन्थ—'राम' धार्मिक दृष्टि से भी विष्णु का अवतार होने के कारण पूज्य हैं। विभिन्न पुराणों में राम से सम्बन्धित धर्मकथाओं के सूत्र बिखरे पड़े हैं इसके अतिरिक्त राम को धर्म एवं भक्ति का आधार बनाकर 'अध्यात्म रामायण', 'अद्भुत रामायण', 'आनन्द रामायण', 'जैमनीय अश्वमेध', 'सीता विजय' एवं 'हनुमान संहिता' आदि ग्रंथों की रचना हुई है। इन धर्म प्रधान ग्रंथों में शृङ्गारिक प्रवृत्ति का समावेश देखने को मिलता है।

---

१. रामकाव्य-परम्परा में रामचन्द्रिका का विशिष्ट अध्ययन—गार्गी गुप्त, पृ० ७८

संस्कृत रामकाव्य-परम्परा का केशव पर प्रभाव—जिस प्रकार रामकाव्य का आदि स्रोत वाल्मीकि रामायण है उसी प्रकार केशव पर भी सर्वाधिक प्रभाव वाल्मीकि रामायण का ही है। इस ग्रंथ की प्रेरणा ही उन्हें आदि कवि से मिली है—

'वाल्मीकि मुनि स्वप्न महँ दीन्हो दर्सन चारु।
केसव यह तिन सों कह्यौ क्यों पाऊँ सुख सारु॥'

इस पर वाल्मीकि ने केशव को आदेश दिया—

'न राम देव गाइहै न देव लोक पाइहै।'

इसके आधार पर हम कह सकते हैं कि आदि कवि से केवल प्रेरणा ही प्राप्त करके केशव नहीं रह गए वे 'रामायण' से किसी न किसी रूप में प्रभावित भी अवश्य रहे हैं। 'कथानक' की दृष्टि से दोनों ग्रंथों में पर्याप्त अन्तर दृष्टिगोचर होता है। 'रामायण' के अनेक कथा-प्रसंगों का उल्लेख केशव ने नहीं किया। कुछ कथा-प्रसंगों में केशव पर वाल्मीकि का स्पष्ट प्रभाव है, जैसे—अयोध्या नगरी का विशद् वर्णन, ताड़का-वध-प्रसंग, बारात के लौटते समय परशुराम का मार्ग में मिलना, हनुमान का सीता की खोज में रावण के अन्तःपुर में भ्रमण, शत्रुघ्न का लवणासुर के वध हेतु गमन।

रामचन्द्रिका पर वाल्मीकि रामायण के पश्चात् सर्वाधिक प्रभाव 'प्रसन्नराघव' का है। 'रामचन्द्रिका' की संवाद-रचना 'प्रसन्नराघव' के संवादों के आधार पर ही है। 'प्रसन्नराघव' के मंजरीक और नूपुरक ही केशव के सीता-स्वयम्बर में राजाओं का परिचय देने वाले सुमति तथा विमति हैं। इनके संवादों में पर्याप्त भाव-साम्य दृष्टिगोचर होता है। वाण-रावण-संवाद भी 'प्रसन्नराघव' से प्रभावित हैं। जनकपुर में राम-लक्ष्मण एवं विश्वामित्र के प्रवेश के समय का सूर्योदय-वर्णन, जनक-विश्वामित्र का पारस्परिक परिचय, जयमाला का दृश्य, वन-गमन, विरही राम की उक्तियाँ भी 'प्रसन्नराघव' के विभिन्न प्रसंगों से प्रभावित हैं। एक उदाहरण द्रष्टव्य है—

प्रसन्नराघव—जनक विश्वामित्र के प्रति कहते हैं—

'यः कांचनभिवात्मनं निक्षिप्ताग्नौ तपोमये,
वर्णोत्कर्षं गतः सोऽयं विश्वामित्रो मुनीश्वर।'[1]

रामचन्द्रिका—'जिन अपनो तन स्वर्ण, मेलि तपोमय अग्नि में।
कीन्हौ उत्तम वर्ण तेई विश्वामित्र ये॥'[2]

'प्रसन्नराघव' के पश्चात् 'हनुमन्नाटक' का भी 'रामचन्द्रिका' पर पर्याप्त प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। 'हनुमन्नाटक' तथा 'रामचन्द्रिका' के अनेक स्थलों पर भाव-साम्य दिखलाई देता है। कुछ स्थलों पर तो केशवदास जी ने मूल भाव कथा-

---

१. प्रसन्नराघव—छ० ८, पृ० ४०
२. केशव ग्रन्थावली (खण्ड २) पृ० २४९

honor 8X

प्रसंग सहित ले लिया है तथा अन्य स्थलों पर उसका उपयोग भिन्न परिस्थिति में किया है। 'हनुमन्नाटक' के कुछ अंशों का 'रामचन्द्रिका' में शब्दशः अनुवाद दिखाई देता है और कुछ भावों को कवि ने अपने शब्दों में व्यक्त किया है। 'रामचन्द्रिका' की कथा का आरम्भ 'हनुमन्नाटक' के प्रारम्भ की तरह ही हुआ है। इसके अतिरिक्त कैकेयी-भरत-संवाद, पंचवटी-वर्णन, राम की विरह-वेदना, राम-मुद्रिका को लेकर सीता की उक्तियाँ, रावण-हनुमान-संवाद, कुम्भकरण और मन्दोदरी का रावण को समझाना आदि कथा-प्रसंगों पर भी 'हनुमन्नाटक' का प्रभाव स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। एक उदाहरण द्रष्टव्य है।

सीता के पूछने पर हनुमान का उत्तर—

'एतां व्याहर मैथिलाधिप सुते नामान्तरेणाधुना।
रामस्त्वद्विहेण कंकण पद, ह्यस्यै चिरं दत्तवान॥" (हनुमन्नाटक)
तुम पूछत कहि मुद्रिके मौन होत यहि नाम।
कंकण की पदवी दई, तुम बिन या कहे राम॥ (रामचन्द्रिका)

'अध्यात्म रामायण' का भी प्रभाव 'रामचन्द्रिका' पर कई स्थलों पर पड़ा है। यथा—अहिल्या-उद्धार का प्रसंग, भारद्वाज द्वारा आश्रम का निर्देश, रावण द्वारा लक्ष्मण पर शक्ति प्रहार, अंगद द्वारा मन्दोदरी को घसीटा जाना। देवताओं की स्तुति एवं रामराज्य का वर्णन ये सभी प्रसंग 'अध्यात्म रामायण' के आधार पर ही हैं। इसके अतिरिक्त 'रामचन्द्रिका' की उत्तरार्ध की कथा पर 'योग वशिष्ठ' का प्रभाव विशेष रूप से परिलक्षित होता है। 'रामचन्द्रिका' के उत्तरार्द्ध में 'रामनाम महात्म्य', 'राम विरक्ति वर्णन', 'जीवोद्धारण यत्न', 'मथुरा महात्म्य' आदि पर पुराणों की छाया है। राज्यश्री-निन्दा, बचपन के व्यवहारजनित दुख, जवानी के व्यवहारजनित दुख और वृद्धावस्थाजनित दुखों का वर्णन 'योग वशिष्ठ' के वैराग्य-प्रकरण पर आधारित है।[1]

रामचन्द्रिका की विशिष्टता एवं मौलिकता—यद्यपि केशव की 'रामचन्द्रिका' पर संस्कृत-रामकाव्य के अनेक ग्रन्थों का प्रभाव स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है फिर भी जिस रूप में अपनी रुचि, दृष्टिकोण एवं परिस्थितियों के आधार पर रामचन्द्रिका की रामकथा को नियोजित किया है, वह अपने आप में यदि मौलिक नहीं तो नवीन अवश्य है। केशव संस्कृत के किसी एक ग्रन्थ से प्रभावित नहीं हैं। संस्कृत के रामकाव्येतर ग्रन्थों का भी उनकी 'चन्द्रिका' पर स्पष्ट प्रभाव है। 'रामचन्द्रिका' की रामकथा का मूल्यांकन 'रामचरितमानस' के आधार पर करना केशव के साथ अन्याय करना है।

केशव के समक्ष हिन्दी रामकाव्य साहित्य न होकर संस्कृत का रामकाव्य रहा है अतः उन्होंने वहीं से प्रभाव ग्रहण किया है। संस्कृत रामकाव्य में भी केशव का आदर्श दूसरी कोटि के कवि रहे हैं, जिन्होंने काव्यशास्त्रीय ज्ञान एवं पांडित्य

---

१. आचार्य कवि केशवदास—कृष्णचन्द्र वर्मा, पृ० १६५

प्रदर्शन के लिए रामकथा को साधन बनाया था। केशव ने सभी प्रभावों को ग्रहण करने के पश्चात् अपनी मौलिक प्रतिभा एवं सूझ-बूझ के आधार पर 'रामचन्द्रिका' के माध्यम से हिन्दी में रामकथा को सर्वथा एक नवीन मोड़ देने का प्रयास किया है। केशव की मौलिकता का परिचय हमें 'रामचन्द्रिका' के उन स्थलों में भी मिलता है जहाँ उन्होंने रामकथा की प्रचलित मान्यताओं का विरोध कर नवीनता की स्थापना की है। 'रामचन्द्रिका' के आधार पर केशव ने तत्कालीन परिस्थितियों का चित्रण भी किया है।

बौद्ध साहित्य, अपभ्रंश एवं हिन्दी का केशव पूर्ववर्ती रामकाव्य—बौद्ध जातकों में भी रामकथा का वर्णन हुआ है। गौतम बुद्ध ने अपने पूर्व जन्मों में स्वयं को 'राम' के रूप में माना है। सर्वप्रथम 'दशरथ जातक' में रामकथा का मूलरूप देखने को मिलता है। इस कथा में सीता, राम एवं लक्ष्मण की बहिन है। भरत की माता ने भरत के साठ वर्ष के होने पर राज्य की माँग दशरथ से की तभी राम वन जाते हैं। 'अनामक जातक' में—जो चीनी में है—रामकथा के कुछ अंशों का वर्णन है। इसमें वनवास, सीताहरण, जटायु-वध, बालि-सुग्रीव-युद्ध, सेतुबन्ध एवं अग्नि-परीक्षा के प्रसंग हैं। 'देवधम्म जातक' में राम-वनवास व सेतुबन्ध की कथा है। बौद्ध कथाओं में राम-रावण के सम्बन्ध का उल्लेख प्रायः नहीं है। कुछ विद्वानों ने वाल्मीकि रामायण पर जातक कथाओं का प्रभाव स्वीकार किया है। इसके विपरीत कुछ विद्वान कहते हैं कि जातकों में ही 'रामायण' की प्रमुख घटनाओं को ग्रहण किया गया है।

अपभ्रंश के काल तक 'रामायण' भी लोकप्रिय हो चुकी थी, पर राम महा-पुरुष के रूप में मान्य थे। अपभ्रंश के कवियों ने रामकथा को धार्मिक प्रचार के रूप में प्रस्तुत किया है। यहाँ राम की अपेक्षा रावण व लक्ष्मण अधिक महत्वपूर्ण बन पड़े हैं। रामकथा के सभी पात्र मानवमात्र हैं। कथा का केन्द्र भी बनारस है। समस्त घटनाएँ लौकिक रूप में हैं। अपभ्रंश के कवियों में स्वयंभू और पुष्पदंत का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

केशव पर प्रभाव—केशव की छन्द एवं अलंकार-योजना पर अपभ्रंश का प्रभाव हो सकता है। काव्य का कलापक्ष ही केशव ने सम्भवतः अपभ्रंश के आधार पर सँवारा होगा।

हिन्दी रामकाव्य—'सूर सागर' के कुछ पदों में रामकथा का संक्षिप्त परिचय मिलता है। कृष्णकथा के मध्य में सूर ने कहीं-कहीं रामकथा का वर्णन किया है। उन्होंने राम कथा के कुछ मार्मिक स्थलों का चित्रण किया है। आगे चलकर माधुर्य-भाव के कुछ भक्त कवियों ने रामकथा को अपनी भक्ति का आश्रय बनाया है। नाभादास के 'भक्तमाल' में रामकथा का वर्णन मिलता है। उन्होंने 'अष्टयाम' में भी रामकथा

honor 8X

के कुछ प्रसंग दिए हैं। उन्होंने राम-सीता के दाम्पत्य जीवन का स्वच्छन्द चित्रण किया है। माधुर्य भक्त कवियों की इस परम्परा के आधार पर केशव ने सीता की दासियों का चित्रण किया है। यह साहित्य केशव की रुचि एवं युगीन परिस्थितियों के अधिक अनुकूल था।

तुलसी का रामकाव्य—संस्कृत में आदि कवि वाल्मीकि ने रामकथा को सर्वप्रथम व्यवस्थित एवं सम्पूर्ण जीवन-गाथा के रूप में प्रस्तुत किया था। वैसे हिन्दी साहित्य में यह कार्य गोस्वामी तुलसीदास ने किया। 'तुलसी राम के जीवन का सर्वांगीण चित्रण करने में वाल्मीकि से आगे ही रहे हैं। तुलसी ने राम साहित्य के माध्यम से जो अमूल्य निधि भेंट की है वह है एक सम्पूर्ण जीवन की कल्पना।..... वाल्मीकि ने इस कल्पना को प्रस्तुत किया था परन्तु तुलसी ने उसका परिष्कार किया। उन्होंने इस भावना को भारतीय समाज की वृत्तियों के अनुरूप ढालकर 'रामचरित मानस' के रूप में प्रस्तुत किया।'[1]

'रामचरितमानस' रामकथा-सम्बन्धी हिन्दी की पहली सर्वश्रेष्ठ रचना है। इसमें अब तक बिखरे सभी रामकथा के ऐतिहासिक, पौराणिक, धार्मिक, सामाजिक एवं लौकिक अंशों एवं प्रसंगों का संग्रह किया गया है। यह भक्ति एवं काव्य का सुन्दर समन्वित ग्रंथ है। मानस में सात काण्ड हैं। प्रथम में शिव-पार्वती तथा रावण का जन्म, तपस्या एवं अत्याचार तथा रामजन्म से लेकर विवाह तक की कथा वर्णित है। 'अयोध्याकाण्ड' में राज्याभिषेक से लेकर वन में राम, भरत के मिलन तक की कथा है। 'अरण्य' एवं 'किष्किधाकाण्ड' में वन की कथा, सीताहरण, राम-सुग्रीव मैत्री तथा 'सुन्दरकाण्ड' में हनुमान के लंका-प्रवेश से राम के सागर तक पहुँचने की कथा है। लंका-काण्ड में रावणादि का वध एवं अवध की ओर प्रस्थान की कथा हैं। 'उत्तरकाण्ड' में राज्याभिषेक तथा रामराज्य के अतिरिक्त भुशुंडि-संवाद, कलियुग, भक्ति-निरूपण एवं शम्भु-संवाद है। 'मानस' में तुलसी ने राम को परमात्मा का अवतार एवं सीता को शक्ति माना है। मानस लौकिक एवं अलौकिक दोनों ही दृष्टियों से सफल काव्य-कृति है।

रामलला नहछ—२० छन्दों का लघु काव्यग्रंथ है। इसमें संस्कार-सम्बन्धी लोकाचार एवं नीतियों का चित्रण है।

बरवै रामायण—विविध अवसरों पर रचे गए छन्दों का संग्रह मात्र है। इसमें कुल ६९ छन्द एवं सात काण्ड है। यह कला-प्रधान काव्य हैं।

'जानकी मंगल' राम-सीता के विवाह की कृति है। **'रामाज्ञाप्रश्न'** ज्योतिष ग्रंथ है इसका साहित्यिक महत्व बहुत कम है।

कवितावली—विभिन्न अवसरों पर रचित कवित्त एवं सवैयों का संग्रह है। इसमें क्रम का अभाव है। इसमें राम की बाल-लीला, सीता-राम का मिलन एवं

१. रामकाव्य की परम्परा में 'रामचन्द्रिका' का विशिष्ट अध्ययन—डा० गार्गी गुप्त, पृ० १२१-१२२

विरह, हनुमान की वीरता, कलि-वर्णन एवं आत्मचरित्र के संग ही प्रमुख हैं।

गीतावली—सूर की कृष्ण-गीतावली की शैली पर लिखा गया ग्रंथ है। इसमें राम-जीवन के कोमल प्रसंग लिए गए हैं।

तुलसी और केशव—रामकाव्य की तुलना एवं प्रभाव—तुलसी और केशव समकालीन कवि कहे जाते हैं। पर तुलसी के 'रामचरितमानस' की रचना केशव की 'रामचन्द्रिका' से पूर्व हो चुकी थी। साथ ही यह भी निश्चित है कि 'रामचन्द्रिका' की रचना से पूर्व ही 'मानस' जनमानस का कंठहार बनने लगा था। केशव ने 'रामचरित मानस' का अध्ययन भी निश्चित रूप से किया होगा। तुलसी भक्त एवं कवि होने के साथ ही साथ लोक-सुधारक एवं लोक-नायक भी थे। उनके रामकाव्य का उद्देश्य तत्कालीन युग तथा समाज के लिए एक आदर्श प्रस्तुत करना था। वे समन्वय में विश्वास करते थे। अतः रामकाव्य के माध्यम से उन्होंने विविध धार्मिक विचारधाराओं एवं लोकविश्वासों में समन्वय स्थापित करने की भी चेष्टा की। वे भक्त थे अतः उनकी कविता में भाव एवं कला का सुन्दर सामंजस्य भी मिलता है। उन्होंने रामकाव्यों के द्वारा अपूर्व एवं अद्भुत काव्यप्रतिभा का परिचय भी दिया है। अपने युग तक तथा युग में प्रचलित सभी काव्य शैलियों में उन्होंने रामकाव्य की रचना की। उनके रामकाव्य पर भी पूर्ववर्ती रामकाव्य का प्रभाव स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है पर संस्कृत रामकाव्य में तुलसी केवल प्रथम कोटि के कवियों का ही अनुसरण करते हैं।

केशव का दृष्टिकोण एवं परिस्थिति तुलसी से नितांत भिन्न थी। तुलसी केवल लोक-सुधारक, भक्त एवं कवि थे, केशव कुशल राजनीतिज्ञ, दरबारी कवि, काव्यशास्त्र के मर्मज्ञ, श्रेष्ठ कलाकार एवं आचार्य थे। उनका लक्ष्य राम के जीवन का सम्पूर्ण चित्र प्रस्तुत करना न था। उन्हें एक आदर्श राजा के रूप में प्रस्तुत करना था। तुलसी सम्पूर्ण समाज से सम्बद्ध थे जबकि केशव केवल तत्कालीन राजन्य वर्ग से। केशव ने केवल राम के यश का ही चित्रण किया है। इसके अतिरिक्त केशव ने अपने काव्य सिद्धान्तों एवं मान्यताओं का सफल प्रयोग भी 'रामचन्द्रिका' में किया है।

दोनों की अभिव्यंजना-शैली एवं भाषा में भी अन्तर दृष्टिगत होता है। तुलसी ने काव्य के कलापक्ष को काव्य का बाह्यांग ही मानकर सरल, सहज भाषा एवं शैली में अभिव्यंजना की है। दूसरी ओर केशव ने अभिव्यंजना-शैली एवं भाषा-शिल्प को सजाने-सँवारने का पूर्ण प्रयास किया है।

इस प्रकार तुलसी और केशव दोनों का जीवन-दर्शन युगीन परिस्थितियों के अनुकूल था। काव्य के प्रति उनका दृष्टिकोण, रामकाव्य रचना का उद्देश्य एवं अभिव्यंजना शिल्प अलग-अलग था। उनमें कहीं किसी प्रकार की समानता परिलक्षित नहीं होती। उनमें यदि कहीं कोई समानता है तो यही है कि दोनों के आराध्य राम हैं, दोनों ने रामकथा को लेकर प्रबन्ध-काव्य की रचना की है, दोनों ही अपने पूर्ववर्ती

honor 8X

रामकाव्य-परम्परा से किसी-न-किसी रूप में प्रभावित हैं। दोनों ही राम को अवतार मानकर उनकी महिमा के कुशल गायक हैं। जिस प्रकार संस्कृत रामकाव्य-परम्परा को तीन कोटियों में विभाजित किया गया था, उस प्रकार तुलसी प्रथम कोटि के तथा केशव द्वितीय के कवि ठहरते हैं।

तुलसी के मानसेतर साहित्य का विवेचन करने से यह निष्कर्ष निकलता है कि उन्होंने भी माधुर्य भक्ति से प्रभावित होकर शृङ्गारपरक रचना की है, उन्होंने भी अलंकार एवं छन्द-बहुल शैली का उपयोग किया है। रामकथा का वह विस्तार जो 'मानस' में है उनके अन्य ग्रंथों में नहीं। वहाँ उन्होंने भी अपनी रुचि के अनुकूल कुछ प्रसंगों को छोड़ा है और कुछ का विस्तार किया है। यही सब विशेषताएँ 'रामचन्द्रिका' में भी परिलक्षित होती हैं। फिर भी केशव के काव्य को क्लिष्ट कह सकते हैं। इसका मूल कारण यही है कि केशव ने पाण्डित्य प्रदर्शन के लिए इस ग्रन्थ का निर्माण किया था।

अतः हम कह सकते हैं कि रामकाव्य-परम्परा में तुलसी तथा केशव दोनों ही दो प्रमुख स्तम्भ हैं। काल की दृष्टि से मानसकार को प्रथम तथा केशव को दूसरा स्तम्भ कहा जा सकता है। पर इसका यह अभिप्राय कदापि नहीं है कि दूसरे पर पहले का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। साथ ही हम यह भी स्पष्ट कर देना चाहते हैं कि तुलसी के रामकाव्य के आधार पर अथवा उसकी तुलना करते हुए केशव की 'रामचन्द्रिका' का मूल्यांकन करना केशव के साथ अन्याय करना है। हमारी दृष्टि में अपने-अपने दृष्टिकोण के आधार पर रामकथा को लेकर 'प्रबन्धकाव्य' की रचना करने वाले वे दोनों ही महाकवि समान महत्व के अधिकारी हैं।

हिन्दी रामकाव्य-परम्परा का केशव पर प्रभाव—केशव संस्कृत के प्रकाण्ड पंडित थे। उन्होंने संस्कृत के ही काव्य एवं शास्त्र का अध्ययन किया था और वे संस्कृत की रामकाव्य-परम्परा से ही प्रभावित रहे। हिन्दी रामकाव्य-परम्परा का प्रभाव या तो उनकी 'रामचन्द्रिका' पर पड़ा ही नहीं यदि पड़ा भी है तो वह नहीं के बराबर है। धार्मिक दृष्टि से वे रामानन्द सम्प्रदाय से अवश्य प्रभावित रहे हैं। राजनैतिक आदर्श भी उनके 'मानस' के समान ही हैं। डा० गार्गी गुप्त ने एक अन्य प्रकार के प्रभाव का उल्लेख इस प्रकार किया है—"धार्मिक विचारों के अतिरिक्त केशव पर हिन्दी साहित्य का प्रभाव एक और दृष्टि से भी समझा जा सकता है। केशव ने रामकथा के बहुत से प्रसंगों को या तो छोड़ दिया है या उनका संक्षिप्त उल्लेख कर दिया है। तुलसी तथा सूर आदि कवियों ने रामकथा के सम्बन्ध में इतना अधिक लिख दिया था कि केशव ने उन्हीं अंशों को पुनः विस्तार देने की कोई आवश्यकता नहीं समझी। इसीलिए सम्भवतः उन्होंने रामकथा के उन्हीं स्थलों को विस्तार दिया जो पूर्व कवियों ने अछूते छोड़ दिए थे।"[1]

१. रामकाव्य की परम्परा में 'रामचन्द्रिका' का विशिष्ट अध्ययन—डा० गार्गी गुप्त, पृ० १८०

honor 8X

केशव परवर्ती रामकाव्य-परम्परा और 'रामचन्द्रिका'—हिन्दी साहित्य में 'मानस' के पश्चात् 'रामचन्द्रिका' की रचना हुई। यही दोनों ग्रन्थ परवर्ती रामकाव्य-परम्परा के लिए आदर्श रहे हैं। केशव के पश्चात् कृष्ण भक्ति का अधिक प्रभाव होने के कारण तथा युग की आवश्यकता होने के कारण रामकाव्य के मधुर एवं शृङ्गारिक अंशों का ही अधिक वर्णन किया गया। रीतिकाल में रामकथा को लेकर यद्यपि कुछ प्रबन्ध-काव्य भी लिखे गए पर प्रधानता मुक्तक काव्य-रचना की ही रही।

रीतिकाल में मुनिलाल कृत **'राम प्रकाश'** प्रथम कृति है। इसकी अलंकृत शैली एवं कथानक 'रामचन्द्रिका' से प्रभावित है। चिन्तामणि कृत **'रामायण'** का उल्लेख डा० भागीरथ मिश्र ने किया है। यद्यपि यह ग्रन्थ उपलब्ध नहीं है फिर भी जो कुछ छन्दों को डा० मिश्र ने उद्धृत किया है उसकी शैली से पता लगता है कि यह भी अलंकृत कृति रही होगी और निश्चय ही इसका अभिव्यंजना-शिल्प 'रामचन्द्रिका' के समान ही होगा। गोविन्द कृत **'रामायण सूचनिका'** और लछिराम की **'रामचन्द्र भूषण'** 'रामचन्द्रिका' की शैली पर ही प्रस्तुत की गई रचनाएँ हैं। सेनापति के फुटकर कवित्त भी 'रामचन्द्रिका' से प्रभावित हैं। अभिव्यंजना सम्बन्धी मान्यताओं में सेनापति पर केशव का पर्याप्त प्रभाव पड़ा है। गुरु गोविन्दसिंह की **'गोविन्द रामायण'** में रामकथा का सुन्दर एवं व्यापक चित्रण हुआ है। इसके अतिरिक्त रामप्रिया शरण का **'सीतायन'**, रामकिशोर शरण कृत **'राम रसामृत सिन्धु'**, सरजूराम पंडित का **'जैमिनी पुराण'** भगवंत राय खींची की **'रामायण'**, मधुसूदन का **'रामाश्वमेध'**, खुमान का **'लक्ष्मण शतक'**, मनियार सिंह का **'रामचरित'**, नवलसिंह का **'राम विलास'** आदि में रामकथा का संक्षेप में वर्णन है। ये शृङ्गार प्रधान ग्रन्थ हैं।

राम स्वयम्बर—(रघुराज सिंह) इस ग्रन्थ की कथा-वस्तु पर तो वाल्मीकि एवं तुलसी का प्रभाव है, पर अभिव्यंजना-शैली पर केशव की 'चन्द्रिका' का प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित होता है। 'रामचन्द्रिका' की शैली पर इसमें अनेक छन्दों का प्रयोग हुआ है। रस-व्यंजना पर भी आंशिक प्रभाव पड़ा है। 'रामचन्द्रिका' की भाँति यह भी वीर रस प्रधान काव्य कृति है। मिथिलापुरी का वर्णन अवधपुरी वर्णन के आधार पर ही है।

राम रसायन–(रसिक बिहारी लाल) शास्त्रीय शैली में लिखा गया महाकाव्य है। 'रामचन्द्रिका' के समान इसमें भी अनेक छन्दों का प्रयोग है। अलंकरण भी केशव से प्रभावित है। रावण-अंगद-संवाद पर भी केशव के संवाद की छाप है।

रामनिवास रसायन—(जानकी प्रसाद) इसमें छन्द-परिवर्तन, राम का वैभव, पंचवटी वर्णन केशव से प्रभावित हैं।

रामचन्द्र विलास—(नवल सिंह) इसमें पूर्ववर्ती कवियों का स्मरण करते समय केशव का भी स्मरण है। 'वर्णन कौशल' पर 'चन्द्रिका' का प्रभाव है।

honor 8X

रामचरित चिन्तामणि—(राम चरित उपाध्याय) यह शास्त्रीय शैली में लिखा गया महाकाव्य है। बहु छन्द प्रयोग केशव के अनुसार है। केशव के आधार पर प्रकृति का बहुमुखी चित्रण है।

कौशल किशोर—(बल्देव मिश्र) यह भी शास्त्रीय पद्धति पर अठारह सर्गों में लिखा गया महाकाव्य है। यह संस्कृत काव्य पर आधारित ग्रन्थ है। रस-निरूपण एवं भाषा-प्रयोग की दृष्टि से यह 'रामचन्द्रिका' से प्रभावित कहा जा सकता है।

साकेत—(मैथिलीशरण गुप्त) काव्य की उपेक्षिता 'उर्मिला' को कथा का आधार मानकर लिखी गई यह गुप्त जी की अनुपम एवं अनूठी काव्यकृति है। गुप्त जी छन्द-योजना एवं संवाद-योजना में केशव से प्रभावित जान पड़ते हैं। शब्द-निर्माण की दृष्टि से भी दोनों में समानता जान पड़ती है।

कौशलेन्द्र कौतुक—(बिहारी लाल विश्वकर्मा) छन्द, अलंकार एवं अभिव्यंजना की दृष्टि से इन पर भी केशव का प्रभाव दिखाई देता है।

वैदेही वनवास—(हरिऔध) संस्कृतनिष्ठ खड़ी बोली में लिखा गया प्रबन्ध-काव्य है। भाषा की क्लिष्टता केशव के समान ही है। सीता-त्याग के प्रसंग की प्रेरणा हो सकती है उन्हें केशव से मिली हो।

साकेत संत—(बल्देव प्रसाद मिश्र) यह बहु छन्दी महाकाव्य है। शृङ्गार एवं वीर रस की प्रधानता है।

परवर्ती रामकाव्य पर केशव का प्रभाव निम्नलिखित रूपों में पड़ा है—(१) अभिव्यंजना शैली—केशव की अलंकार, रस एवं छन्द सम्बन्धी मान्यताओं ने परवर्ती कवियों को प्रेरणा दी है। (२) परम्परागत कठोर बन्धनों को तोड़कर नवीन शैली में महाकाव्य लिखने की प्रेरणा। (३) राम के ऐश्वर्य एवं राजश्री के चित्रण में। (४) संवाद रचना की दृष्टि से। (५) शृङ्गार एवं वीर रस प्रधान महाकाव्य की रचना।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि हिन्दी रामकाव्य-परम्परा में 'रामचन्द्रिका' का महत्वपूर्ण स्थान है।

संभावित प्रश्न

१. रामकाव्य परम्परा में केशव की 'रामचन्द्रिका' का स्थान निर्धारित कीजिए।
२. "केशव की 'रामचन्द्रिका' पर हिन्दी रामकाव्य की अपेक्षा संस्कृत रामकाव्य का अधिक प्रभाव है।" इस कथन की विवेचना कीजिए।
३. तुलसी और केशव के रामकाव्य का तुलनात्मक अध्ययन कीजिए।
४. रामकाव्य-परम्परा की पृष्ठभूमि में केशव की 'रामचन्द्रिका' की विशिष्टता एवं मौलिकता का उल्लेख कीजिए।

———

honor 8X